विदेशप्त वद्या वीषा वेशप्र विद्रुष यो अस्ता मूर्वेदशि व्याप्यतानुषाम्पञ्चात्र्रात्रिक्षेत्रवर्ष्ट्विवविद्या ग्रह्मक्रिक्षिक्षेत्रम् भीषामाण्येषा मृत्यिक्षेत्रम् । 265 पङ्गकितकार्त्रकृत्वानुवायम् अवस्थितकेष्ठविक्षाम् विद्यानिक्षाम् देवकेष्वकार्यक्षक्षाक्षाक्षाक्षान्त्रम् देवकेषिक्षामा देवकेषिकेषामान्त्रमान्त्रकार्यक्ष स्थायकद्यां स्थापित स्थापित वेक्स्त्रामक्कितिकार्स्ट्री अस्थातव्रक्षमध्यक्षेत्रस्यक्ष्यकात्र्यस्य तत्रत्यात्र्यात्र्या इताउद्वेत्रश्चकृत्त्रदेशस्य द्वाविक द्वाविक विकास कारा करियों के विकास करियों के विकास करियों वि वर्षातर्वार्वेषु वसातुर्वात्रम् वस्तु वर्षे द्वाराद्वा से क्षेत्रम् स्थान्ति स्थान्ति स्थान्ति स्थान्ति । द्वार वर्दर:एखे (प्रमामकार्यस्य वैन्द्रम् वैकेकेव्यायमहित्याराद्या र प्रवच्या नगरा न्त्रेशन्त्रमान्त्रभन्द्रन्त्रेर्तार्थः विद्धित्रम्थायद्वार्यन्त्रविद्यान्त्रम्थान्त्रविद्यान्त्रम् विष्या नाजवाम देवद्र विवादि । वेवावा एउ पूर्विद् चित्केन अध्याद्यां विश्वाद्यां वंशवात्त्वराहूर्द्धः। क्रिक्रिक्रामास्त्वरात्राद्धः विक्रिक्ष्यवस्य अन्यति । वहराद्ययद्रा केशयनश्रेद्यप्रवाहुर्हेशक्रीयवेर्येनभ्रेरवद्रा द्रियापालक्ष्यानिस्क्रियक्ष्रभारवर्तिमस्य

नेश्र रच्छित्र रेश्वर मुद्देश वर्ष्ट्र गर्देश प्रकाश कर शैर्दे के देश सम्मान देश विश्व सम्मान स्थान , वरिक्षेवस्थर स्प्रेचिंद्धवादिक्षवादिक्षयर देश देश सामित्रहर्षे लंद्रश्राचक्षेत्रकेट्यस्थिकेवच्चेत्रवशक्ष्यक्षेत्रहे ज्सिन राष्ट्र कार्य देश कर रिवाद कार्य कर है कि है। चुर्के मर्थश्रिकार स्ट्रियम्बर्धाः रिट्रेन्कग्रेणश्चिमध्यद्वयस्य द्वास्य द्वारिक्षे त्रास्त्र स्ट्रिय प्रमास्य स्त्र है। चिद्रकृपरोठारा स्पर्यायकार हो। म् जायविकेद प्रदेश सम्द्रवायवेवक्षादे विद्यास्था र मुस्कृमकोत्राकाद्यवेगावसकी। **चिट्कमर्गअयद्भवन्त्रभागः** नि-किवयुरम् र्वराष्ट्रसम्बद्धारत्वासत्वात्रस्त्रीत्र्यं यु निस्क्रियम्बर्धारास्य स्थान्यावस्य |स्वारमहरूपसर्द्वामदेवाद्वतदेविन्द्रोमुखे। चैद्क्रियश्रेश्वराद्धार्थां स्वार्थां स्वा निर्देशकार्यात्राचित्राचित जिन्न क्रम करमा परे वाक्स दे के ने भु **जिद्वेय चर्चेद्वक्रम्यस्या**पदेगात्रसदेवेवदेवे हे। श्रिकारा प्रकारमा प्रतिकारिक देव देव देव है। क्षित्रकारम्यामद्रमध्याद्रवेशः निट्यम्बायायारपारवादवादवाद्या मुस्क्चराजनाम्।रेगववर्गाः विद्रम्मश्रश्यद्वाद्यास्य श्रित्वहरा सरस्वासक्वेशस्त्र विक्रिक्षे विक्रिक्षेत्र |मानुपार्य द्वायरमायदेगाद्वर देवेयरे भूके| चर्रु मर्गयाया द्वार मोर्ग्य यो। |र्रेड्स धरदवाचवेकेवसदेवेचरीयुष्ट्री | देवसायरस्याराचे मावसा देवेतर् सुर्थः क्रानर्यामन् विषय द्वित्रिक्षे मिर्क्यकेशका सम्प्रविद्या मुस्क्रियेशेयवस्थित्वात्वात्वात्वा ।र्याद्वश्रास्त्र्यास्त्रायस्था मिर्श्यम्भाग्रा द्रायम्बर्गा

क्ष्मिवस्य उद्धिद्वेनेद्धियर्श्रेट्यर्भद्भावस्य स्वत्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्राम्यात्रा -39 । शिजानशक्ष्म अस्त्रीत्त्रभूतिभा तर्रात्ते तत्त्री श्री व त्त्री श्री व त्त्री श्री व त्रिय व वैक्केंप्स यवेश्वेषणम् **ईबरीश्वेपयम्स** व्यवश्चित्रपक्रेत्रच शिक्षितस्याद् च्याचीवाकः क्षेत्रकः व्याद्यां चार्या योगाया स्वाद्यां स्वर्थात् स्वर्थान्ति । र्मेचान लट्टिश्<u>या स्विधित स्वत्र्य तथ्य तथ्य तथ्य त</u> अवस्थित्यं पर्दा क्षित्र छेदमद्दा भेर्यकेशप्रमान्द्रियाभ्य पर्भे दें है विकिद्धिक विषय स्वायन स्वायन स्वायन स्वायन स्वायन क्रियम्बर्गारस्थ रहारमस्य जिस्कित्तकारान्यक्षेत्रपूर्क्षत्र स्थाना स्थाने अक्रवितिर्वर्वेर्यर्वस्य दिवयगर्वेक्षयुव्यवद्वयम्बर्द्द्वयम्बर्वम् विम्यवयम्बर्धयम्बर्धयम्बर्धयम्बर्धवर्षे इंडिक्ट्रियहर्तनाचीर्शयक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्याच्यत् वार्थयवर्त्यात्त र्शियकोर्यस्य इंड्रेचायर कर्तवृत्त्रका कर्ष्य वर्त्त्रका वार्त्रवाचिक चर्ने वेष कार्य हिन कर्त्तिक द्वाळेचारे**वर्षेया** अवयत्मावकः वास्त्राम् विष्याः क्षेत्राक्ष्यं कर्णक्षयः वर्षः स्थान र्वस्था र वापम र्वा अवस्था अवस्था स्थापित स्थाप विक्रमाहत्वहर्षावित्वापा वर्षात्वाहें विक्रमाहें विविद्धिके वे वार्षा क्षा रहा विद्या विविधिक विविद्धिक विविधिक विधिक विधिक विविधिक विधिक विधिक विविधिक विधिक वि

र्द्क्षिण**स्देगवेत्वानेवानामामामान्द्रीविववेर्क्रकोत्हर्द्यप्रदेवायर्क्षवयानुदर्**क्षणयानेवानेवायानेवास्त्रीतिवर् र्म्ह्रे मार्श्ने के के प्रमुद्देश का मार्थित कर्त्य प्रमुद्देश प्रमुद्देश कर के प्रमुद्देश के प्रमुद्देश कर के प्रमुद्देश के प्रमुद्देश के प्रमुद्देश कर के प्रमुद्देश कर के प्रमुद्देश के प्रमुद्देश कर के प्रमुद्देश कर के प्रमुद्देश के प्रमुद |देवच|ठेचरारेखेरदेवश्वरामभेदारेवचरहेव|सरायमुद्धपावरेख्यारेखेरकेवकेवदेशे विस्तर्यं कर्त्यं क्रिया चर्ये थे हैं दिवामस्क्रेस्क्रावाकर क्रिक्राव्यक्ष्यक में वाद्यान क्रिक्राव्यक्ष्यक क्रिक्राव्यक्ष्यक विद्या क्रियादेश्वायप्रसार् क्रिक्ट व्यक्ति विद्या क्ष्या व्यक्त व्हेंबपदा नाचरहरूकेकरस्वकारस्यकारस्यकारस्य स्टब्स्य स्टब्य शिरदेशिवेश्वरेदा.लद्द्यातर कृतिक संत्र तेरक्षं चित्रकृति वारकूष वारक्षेत्र वारक्षित्र । रिवस देवेद इयामार सम्मान चर्डेठाग्रेयपर्य थे:वेब द्वासुर्द्धर अध्या क्ष्री शाम्ह्य पर्वे वावरणार्द्धित के के र्युवर्ड वावेव रचित्र प्रदेश रहाया । क्रम विश्वयन्त्रक्रिक्ष व्याप्ते द्वीते देव वर्षे विश्वत्वर्षेत्र पर्यन्यार् द्वार यहिरावविश्वयद्यन्य प्रत्येत्र कर्जियभ्यायभेद्वाता इस यम्बुर्भययथुर्भयविक्रान्तर्यक्रायम् तर्रदक्षणकार्धिर्युक्ष राजेद्यकेद्राकेक्षण्यकार्यकेष्ट्राचित्रकार्यकेष्ट्राचित्रकार्यकेष्ट्राचित्रकार्यकेष्ट्र हिं ध्रुवराष्ट्राययादेव मद्दे। स्वाविश्वेरायसेद्यभेद्षीयक्राम्स्ययञ्द्रश्वायसेद्यभेद्दे वहें

। क्षिर्यमध्यरेतालर्रवातर्भूक्षातप्रविदश्कित्रह्मार्थ्वतर्भूम् । क्रियमदेशयदिगयदेन्यस्विद्धेराकाश्व वाश्वराद्धेश्वरायतेश्वराश्वराध्यात्रह्मात्यर्थस्य दिवर्ग्ययस्थित् 269 व्ययप्रकृष्यम् दृतेष्ट्रिक्ट्रिंद्रेश वह्रवाहेत्वम्भागमञ्जा नन्द्रीनाचतुर्हेह्वेमचित्रहिनास्त्रिन्भवभास्त्राम्रेन्द्रद्रवश्यादेशी दिवसमर्थसम्बद्धानम्यस्यमन्द्रम् मन्त्रचार्त्यस्य वर्ष्ट्रचित्रवार्यवार्यवर्ष्यम् इंदेश्वय वर्ष्यस्य विश्व देशवर्ष्य विवाय विवाय वर्षिय विवाय वर्षिय विश्व विवाय वर्षिय वर्षिय विवाय वर्षिय वर्ष्य वर्षिय वर्ष वर्षिय वर्षिय वर्षिय वर्षिय वर्षिय वर्षिय वर्षिय वर्षिय वर्ष्य वर्षिय वर्षिय वर्षिय वर्षिय वर्षिय वर्षिय वर्षिय वर्ष्य वर्ष्य वर्षेय वर्षिय वर्षेय वर्दिकन्त्रशास्त्रकाराज्यस्याप्यव्यक्षित्रेवववेश्वत्यभगजन्त्रस्याप्यत्वाप्यत्याप्रदेश <u>्रिश्रम्बर्धकर-प्रशास्त्रस्यायकम् विदेश्यक</u>्षेणसम्बर्धकरद्वेशस्यः ब्रायन्त्रियाक्रिक्शियाम्बर्धाक्रिक्ष्यं यात्रिक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व्यक्षेत्र व र्यम्बर्ट्रहेश्यायनेय" क्रिय देशय त्रर्थं स्टर्धं त्राच्यर्वा वाय हो ने देव व्यवस्थाय त्रम्य स्वयं स्थापर देव स्टर्धं स्थापर देव स्थाप मुंद्रिक्रिप्रेय्यूर्या मंद्रिया क्रियम्या राष्ट्रिय रिवक्कियर्थिक्षित्र सर्वर्ष्ट्य वर्षेत्र सर्वर्ष् र्श्वेभयदेवदेद्कवशद्रा इस क्ष्रां १ र के प्रत्यार देवाकर तर्श के विरयद्दक वाल के प्राप्त प्रस्पादर। इंग्रह्मश्रद्ध। र्गूग्परद् **एड्रॅंक्**यप्रा ित्रकाचिद्धियास्त्रश्चारम्भवद्भावाद्विवद्गार्थेश्वरकाचित् श्रीरशिवेश्वर्ततात्तरर्वात्रप्रह्वायात्र्वेदिकेवश्वर्षत्रप्रह्वायारवश्वरक्वेवर्यर्वक्रियः

तिर्द्धित्त्वर्गातम्ब्रेट्टियार्थ्यत्त्रम् वित्तर्भात्त्रम् वित्त्वेत्त्रम् वित्तर्भात्त्रम् वित्तर्भात्त्रम् 270 र्यरक्षेरक्षेत्रविषयिष्यव योश्यप्रश्चार्यक्षेत्रक्र्यार्थ्यक्ष्यार्थ क्रिया होत्या विश्व विश् । दिवशक्तिक्षांश्वाराद्यवस्थायस्यक्षेत्रवात्रवस्य र्यर्वश्चर्यक्षभावर्ष्णेर्व्यक्ष्येत्रेव्यक्ष्ययेवव्यक्षेर्य्यर्श्चेष्या । ह्य देव्यक्ष्ययेवद्यदेवविवयनेव्यवप्यक्ष्यात्र्यं विवय रद्यी अर्थाय रूर्ट्रे रेव रेके वेद्वरम्भूरपति सुर्यविद्विद्विद्वित्र के के र्युक्ति। देवविद्यानेव्ययभाउद क्रिक्रियम देवविषया-वेवाया मध्यास व्यक्त स्वर्धित स्वर्धित क्रिकेनुस्विम् मेर्परक्षिक्द्रमाधुर्मित्रे मानेनाशयस्य वर्गर्भेद्रिक्स्र |देवक्षेत्रम्भवाबादावस्य अन्तर्भक्षेत्रम्थः अन्तर्भक्षः । ित्यवेत्र चान्वबारायशयश्रद्भवाश्वर वाष्ट्रवास्त्रकार्यश्वर वाष्ट्रवायश्वर विवास्त्रकार्यः देवारायकारम्। तिहेत् वर्वे हैं दरेवहेत् स्त्राण्डदेश्ववयम्ब्यू स्त्री विनाम प्राप्त प्राण्य प्राप्त हिंदी राज के पार देशव

*ीटारपेग्*यपर्दर। 441394954 र्वायराय्यययग्रहस्र दिश्व वेदक्षेत्रकार्यसम्बद्धारके विद्युद्ध के स्वति के स ३ हिन्द्दिवद्क्षण्यपद्यपद्यक्षा श्रुम् स्वित्वे अद्यापाद विद्यार है वाक्ष यद विदर्भ वश्रदेव वर्ग है वाक्ष यम् यद विदर्भ विदर्भ विदर्भ विदर्भ व क्षां अस्ति हैं स्वार्थित स्वार्य स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्थित स्वार्य स्वा देवेंग्रेन्बेदपर्वर्क्षण शिवर्के वाचवाप उन्हें दपने देवे विक्रविद्या स्थित हैं यह विक्रव के विक्रव ब्रियमेर्या स्थानिक स् वायदेगक्ति तेश्याक्षेत्रविद्यो के विविध्या है। का देवशयर्थ विद्याने विद्याने विविध्य विद्याने र्द्र कुंक्रोश्नराहे देवाचे विदर्भ व कुंक्रा स्थार प्रकार प्रकृत व कुंच्या कुंच्या का वा विदर्भ प्रकार प्रक इंडिश्नेशरानुरेकार्ट्यात्रुंद्रेवधुर्वानेय्यारा वस्तर्भरद्वित्त्र्र्या पर्दिवारा रक्षित्र्र् 15561991991

क्षेत्रमानुनेपानहित्रमानुर्देशकेर्युर्भकेर्युर्भकेर्युर्भकेर्यू रिसर्ग निरम्भा सम्बद्धार के स्वार्थ स्व क्रियंत्र क्रियंत्रे क्रियंत्र क्रियंत्र क्रियंत्र क्रियंत्र क्रियंत्र क्रियंत्र क्रियंत्र क्रियंत्र क्रियंत्र क्रियं विष्टे देश देश देश विश्व क्रियं क्रिय विक्रमाने में प्रतिक विक्रमाने विक्र | वेस्प्रकर्वक्का<mark>नस्य क्वा</mark>यस्य स्ट्रांप्य स्थ्रिय पार्व देपवेदेवी-प्रेवाय प्रस्ति स्थ्रिय स्थ् निवस्ति विस्ति । भेवस्ति स्वर्धियम्। |द्रम्पदिक्का भ्रेट्सक्ष्याद्वित्वदे<mark>देववेदवा-वेवास्य पद्मश्</mark>यक्षरायक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष्यक्ष र्रोणपद्धा वंदेवसद्दा गर्देश्यम्त वर्क्ट्रम् केर्पवेद्रमिलेक्ष्यानेवाक्ष प्रमास्त्रकार्यस्थार्केद्रपार्वे विक्रमार्थे दिवत मुद्र सूर्यक्षण द्वार केया कर्पनके वर्षक्य कार्यक है। श्रुवसद्दा *न*विषय सम् पर्वत्र प्राप्त वर्ष्ट्र श्रिष्टे प्रत्य प्राप्त वर्ष कर्रमण्डमदिरमञ्ज्यान्यमुद्रपिरपेरपेरपेरपेर्वेष्ट्रपार्थे देशपर्यम्भिर्यदेशपेरपेरपेरपेरपेरपेरपेरपेरपेरपेरपेरपेर र्भार्यक्षमाण्यक्षेत्रकेरणे के प्रतिकार के विदेश विकाप स्वाध्याप र देश केंद्र पर्याचे पर्व पर्या है। विस्रवार्डद्यायार्डद्यात्रसम्बेद्धायात्रीद्धायाः वाक्ष्यं श्वाद्यकारा उद्देश पर्यन्ति पर्यन्ति पर्यन्ति पर्यन्ति पर्यन्ति पर्यन्ति पर्यन्ति पर्यन्ति पर्यन्ति प शिक्षक कर समाय कर हेंद्र केंद्र एक

मक्षेत्रमानुनाई सक्षेत्र देशके परिप्राचित्र विद्शित्क्रित्क्रित्त्वे क्षित्त्वे विद्शित्त्व । । । देशवाक्रातिवद्शित् विविध्विष्यिक्षात्र विद्शित्त्र विद्शित्त । । । देशवाक्ष्य विद्शित्त विद्शित विश्वयंत्रद्रम्भेर्पयभेषस्वतिम्भेर्द् विश्वास्त्र के अपने के विश्वकर्तकाश्वर तथः मेच प्राक्रेय प्रवाहित्यः। विद्यान्यपत्रियम्भवेषम्यक्षेषम्यक्षेत्रम्यन्यस्य देवकेन्यवश्रक्षक दिस्य प्रश्रामुख्यस्य व्याप्त स्ट्रिय विश्व वानीवाय सद्दा न शिद्धाक्षेत्रानेश्वर्यविश्वर्यविश्वर्थे। है। रशमश्रुवारम् अर्चित्रकृषाः विद्याने विद निर्द्धातकाश्चर्यात. र्यक्ष तरुश्र केथ वर्ष र संविधियो भवाश र स्था १०० र ए देश विश्वायक्षेत्रहें हैं के देवाय देवाय के प्रकृत प्रकृति के प्रकृत कर के देवे हैं है के के देव के देवे विषया दिवदक्षेत्र में मुक्ति विवाद राष्ट्र विवाद राष्ट्र विवाद राष्ट्र विवाद विवाद विवाद विवाद स्थाप कर् 1591251543572015" विवृह्यमा मेरामा के इस्था कर दिस्त के मेर्ने हर्ति । सिया मार्थिय मार्थिय विविधिय मेर्ने स्था से से स्था से से से स्था से स्था से से से स्था से से स्था से स्था से स्था से से हिर्मातुत्र्म् कर्तुन्त्रमाश्वर्षात्रमा कुन २ दूर्व में सिट्युर्ग कुन्युद्धिकुर्युत्व कुर्युत्व

न श्रूपधरेशकेंग्रेशपुप्तरक्षिते । - श्रूपधरेशकेंग्रेशपुप्तरक्षिते मधीदेनिविदेशुटवै निस्यविष्यं विद्विद्वेद्वयस्य सम्बद्धाः देवविष्य निष्य प्रमाणकार्यः विद्वानिष्य प्रमाणकार्यः विद्यानिष्य प्रमाणकार्यः विद्यानिष्य प्रमाणकार्यः विद्यानिष्य प्रमाणकार्यः विद्यानिष्य प्रमाणकार्यः विद किंग्युन केश रवश्चित्र रावे के या वर्षे पावदेव कर् निसम्प्रणेखर्याहुद्वेदास्येकेदपर्हेदपर्शर्द्वेदस्य <u>र</u>हेष्ठस्य उदस्य स्टार्केट्रे भिष्मार्थ वैन विर्ययम्बर्धियात्यशे दश्यकेषाक्ष्यम्बर्धाकेन्द्रा भिषरवश्चित्ररेगर् धुवरायधर स्वाधयेदगरेदपार्केश स्वाध्ययस्य स्वाध्ययद्वापायेदपारेदेग्वेवी शितनिभाज्यकुत्रकृति हैवतदृष्ति वर्षिष्य पर्दा 4 वस्ययदा विगयदा मृह्द्यदा क्रियदिवयात्वाक्ष्यक्षाद्वा चिद्धवयाव्याद्वाद्वेद्वयाव्याद्वेद्वे क्रियद्वयाव्याद्वेद्वे क्रियद्वयाव्याद्वेद्वेद्वयाक्ष्यपद्वाद्वयाक्ष्यपद्वयाक्षयपद्वयाक्ययपद्वयाक्षयपद्वयाक्ययाक्षयपद्वयाक्षयपद्वयाक्षयपद्वयाक्षयपद्वयाक्षयपद्वयाक्षयपद्वयाक्षयपद्वयाक्षयपद्वयाक्ययवयाक्षयपद्वयाक्षयपद्वयाक्षयपद्वयाक्ययपद्वयाक्षयपद्वयाक्ययपद्वयाक्ययपद्वयाक्ययपद्वयाक्षयपद्वयाक्षयपद्वयाक्ययपद्वयाक्ययपद्वयाक्ययपद्वयाक्षयपद्वय र्देश्वास्त्रमस्यू प्राप्त देश्यदेक्ष्रिय मियाव यस्था वर्ष केंब शुक्र गुप्सावदेदेव विद्यादर। मिट्रेगकेर देवीयशासियोगा होग्दिकेर राजेग्सर्थेयाया । स्वारा राजेदरा सुर दुर्वार रार वृत्रेरा वाया देहे वाये वाया रावेश सुर वाया स्वारा स्वा

विदेशसंत्रित्तम्हित्तप्रकृत्य . र्दिश्रेक्किकिक्षमञ्जूषर। विन्यक्षेत्र हेर्न्स्व विवर्धकेता किन्द्रेक्ष्यम् ज्ञवयेप मा स्वापाद देवा वहें व चर्चे। 275[প্রগু । द्वन्यद्भयप्रस्थ व द्वद क्रियंत्रश्रम् स्वीत संग्राम्यक्षिरी **्रियुट्याश्चरतास्त्रकामात्रदर्ग** विश्वकृत्यम् विश्वविद्याम्य बर्ब के बचरके नवस्त्र स्थान 'ব্ৰৱ্য**্বত্ত**্ব र्स्यायक्रिक्ट्रियायम्। दिवसम्बद्धान्य देवले वानीवाय महस्र राज्युर <u>६८६५७५४ माने गर्यमञ्जय प्रश्रं क्षेत्र</u>प्रदान्द्रेश स विस्तर्यर्थित्वस्त्रप्रम् निपर्वेषक्रविश्वरश्चित्रविष्याच्याच्याच्या हिंहेरुव केष मनद्भाषा STARY. अ क्रियम्बर्वार्क्तम् विक्रियम् विक्रियम् विक्रियम् विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिया विक्रिया विक्रिय विक्रिया विक्रिय विक्रिय विक्रिय विक्रिया विक्रिय वि <u> द्विषक्षेद्वदेदम्यन्द्विश्वदशक्</u> विस्कृष्यया या द्यारक वृद्ये िर्देशन्यक्षत्रस्थक्षव्यवस्थायक्ष्यक्षत्रस्थक्षत्रस्थक्षत्रस्यक्षत्रस्यवद्गतिन्द्रस्यक्षत्रस्यक्षत्रस्यक्षत्र तं विश्वश्राक्तरिक्तिविष्यतित्वातित्वतित्वतित्वति विश्वति विश्वति । विश्वति विस्कित्युश्यान्तराकृष्यम् इत्यानुर्वेत्रवित्तिक्षान्यवायाः वर्ष्यित् वित्रकृत्यान्यान्यात् वर्षात् वर्यात् वर्यात् वर्षात् वर्षात् वर्यात् वर्षात् वर्यात् वर्यात् वर्यात् वर्यात् वर पिट्टिनगैयगर्पारकेवर्रियार्थण्येपहर **द्यापर्**क्रर्रे कृष्युर्वे तथा व वा वा विकास विकास व व

देशेदपार्वञ्चलकाश्रदी वर्ष्ट्र महित्र में केंद्र में दे दे रिक्स माराम्बर्ट्स न्द्रियक्ष । जन्म प्यानेश्वयक्षम्भूम्भ्यम्भवी **स्मित्स्यायस्यायरेखे**रा LANGE STATE OF THE PARTY जिनस्त्रिक्ति स्वास्त्रिय विष्यप्रविष्य विद्याप्य स्थाप क्रियम्य विषय्त्र प्रमास् 和大大学的大学大学的 **ग्रिक्ट** दिम्बद्ध गद्दा प्रदेशेष प्रयोश विक्रम्बर्ध्ययस्थ्य क्रिक्ट्रिक्रिक्रकाराज्यक्रिके मायद्यंत्रप्रमाद्यं केश्राम्यक्ष्यर्थि हिनेनिर्दिश्च के के विकार के किया है किया है किया है किया है कि विकार के किया है किया ह **७५%**वि

अर्थिगमकेदम जीवर्गेक्ष्मप्रदिक्षणीकिक्ष्रीहेर्द्यो। कि द्वैषयक उर्ग्युक चे सिर्पे केंद्रिया नेपाय सम्बद्धार कर् र्णदेवविषणहुमस्य र्वाद्वा भी देशपरम्पर्के वार्षे सहस्र हम्भा क्षार्द्द्रमाम स्ट्रिक्यासमा ाचा हर्षेत्रहे छोषाहेश उपवेशे हें न श्रीयेष्ट्रभा का लिंदेवनियानेपश्चाप्रसम्बद्धा न्या ध्रीनेषम्बर्कानम्बर्धसम्बर्धाः क्या । अर्द्भविद्यविद्याम् यावस्य विद्यान् स्थापा **3** 41 अ श्रीवाद्यविवेदसम्प्राध्यक्षकद्रकेश्वादीवा क्रिन्स्क्रियास्यक्षकर्श्वास्त्री हुर्गा क्रियाचार्थ्याच्यास्य क्षं जुन्तरमाधिक क्षेत्रिक क्षेत्रक क्ष भिनो सर्दि र माल्याना एठा। धीमे उच्ही प्रम्या निर्मावर्दे हे देविसे श्रवर वर्षे में पर से महामार्थी देविस स्थानिक में विद्यम्बर्गाउद्याप्यस्य स्वायास्य स्वायास्य स्वायास्य स्वया विद्यां वित्रमा वित्रमा के वित्रम नम् मृत्रिद्धियुर्ग अके दयम्बेह्यानी शन्त्र के अवस्माना में प्रमानिक मन्त्रीत्ता भविकार प्रमान के देशा 232 नुसम्बद्धाः स्टा |ज्यायम्ह्यारमगर्यायस्य क्षेत्रकृतास्यास्यानाम्यास्यानास्यास्यास्य

, अञ्चलमदेरमामीशनेशन्त्रधेषर्रेमार्ष्डेवपकेस्य केश्वेर्वेर्वेर्वेर्वेर्वेर्वेर्वे विस्वायम्परिवेशमप्रविद्याम् म्यार क्यान 278 मञ्जूषयमा सुम्दे। बर्वत्वरक्षम् देववाद्यम् त्ववस्य स्थाप्त दिनक्षण राष्ट्रिक्य र चेर्त्रु चर्त्र पर्वे चर् रिकार्यस्थिको इत्ये करकर विर्यम् **क्रियमळेत्**यमहोदरा ET PE । भर्मस्वर्षास्य स्वाद्धेस्य स्वाद्धार्यः 14/3/4/4/X4J **अद्भवस्य कुन्न कुन्न वाद्द्र**याद्द्रया **लप्तक्ष** विद्यासक्तिक रचित्राच स्टब्स् भ क्षेत्रप्ताः केष्ट्रपत्तक्ष्यक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्षयक्षेत्रक्षयक्ष्यक्षेत्रक्षयक्षेत्रक्षयक्षेत्रक्षयक्षेत्रक्षयक्षेत्रक्षयक्षेत्रक्षयक्षेत्रक्षयक्षेत्रक्षयक्षेत्रक्षयक्षेत्रक्ष्यक्षेत्रक्षयक्ष क्रिक्ष्यक्षयसम्भवक्षयस्य द्वादक्षवक्षयावाद्दे हेर्द निश्यमियं वर्षा क्या देवा ने प्राप्त के प्रा 3592484444444 क्षा वश्यकर्र राज्य वर्षय वर्षय वर्षय पर्वाध्वपद्वर्षण्यमासुस्याच्यायदेव्यास्यकृद्री। पिरवास सम्बर्ध र उत्तास स्परि होते सर्वे देव सर्वे वा समित <u> इंबर्यक्षयं स्वाह्यहर्यम्</u> शुक्राय्ये दरा वस् श्रदर स्कृत स्मालका पर्शतिवेदशिक्त सुर्गात्तवस्ति स्ट्रिस्ट्र म्बद्धाद्या SICAL SI उक्कान्य द्रायका निक्रमानु कर्म चेटकेवयुवाया देशहरे हो अनिविद्ये के वाद्या स्थापन 1551 भ्देश्वद्वायेलसेलस्हलक्केव्याः ।